मास - मई, 2020

मोड्यूल संख्या - 2 (भाग-2)

MODULE NO. 2 (PART – 2)

कक्षा - आठवीं

विषय - हिंदी [द्वितीय भाषा]

पाठ - तलाश [भारत की खोज]

रमेश चंद

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय - 1, मुंबई

तलाश

- भारत माता
- भारत की विविधता और एकता
- जन संस्कृति

भारत माता

नेहरू जी ने गाँव के लोगों को भारत के विषय में बताते हुए कहा कि 'भारत महान है'| हम सब इसी के हिस्से हैं | 'भारत का नामकरण' प्रतापी राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम हुआ| अपनी सभाओं में उन्होंने श्रोताओं को बताया कि इस महान देश की मुक्ति के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं | मैंने उन्हें उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम कीटक के किसानों की सामान्य समस्याओं की जानकारी दी |भारत के हर हिस्से में किसानों की एक-सी ही समस्याएँ थीं | जैसे - गरीबी, कर्ज, जमींदार, महाजन, भारी लगान, कर आदि | ये सब उस ढाँचे में लिपटे हुए थे जिसे ब्रिटिश हुकूमत ने आरोपित किया था | भारत अखंड है , हमें मिलकर इसे आजाद करवाना है | हम विराट विश्व के हिस्से हैं | किसानों से मिलकर लेखक को पता चला कि किसानों को प्राचीन महाकाव्यों और गाथाओं की पूरी जानकारी है |

नेहरू जी किसी भी सभा में जाते तो वहाँ उनके स्वागत में लोग 'भारत माता की जय' के नारे लगाते | जब मैंने भारत माता के विषय में सवाल पूछा तो वे सब एक-दूसरे

के मुँह की ओर देखने लगे | उत्तर न मिलने पर उन्होंने स्वयं बताया कि 'भारत माता' भारत की मिट्टी , नदियाँ , पहाड़ , जंगल , खेत और भारत की जनता ही है | ये जनता जनार्दन ही 'भारत माता' है | 'भारत माता की जय' का अर्थ है - जनता जनार्दन की जय | भारत माता के स्वरूप में रहने वाले लोग आ जाते हैं | हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, पूर्व से लेकर पश्चिम तथा उत्तर से लेकर दक्षिण तक की सीमाओं में आबद्ध यह पूरा देश 'भारत माता' है | यह बताकर उन्होंने किसानों के दिलों में भारत के प्रति प्रेम जगाया |

भारत की विविधता और एकता

नेहरू जी ने लोगों को बताया कि भारत की विविधता अद्भुत है, प्रकट है , वह सतह पर दिखाई देती है और कोई भी इसे देख सकता है | इसका ताल्लुक शारीरिक रूप से भी है और मानसिक आदतों और विशेषताओं से भी है | भारत का अवलोकन करते हुए देश के विभिन्न भागों में गए और देखा तो उन्हें लगा कि भारत में अनेक विविधताएँ मौजूद हैं | लोगों के रहन - सहन , खान-पान , वेशभूषा , भाषा , धर्म में विविधता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है | भारत की भौगोलिक स्थिति में उसकी विविधता छुपी हुई नहीं है | कहीं बर्फ से ढका प्रदेश है तो कहीं तपता रेगिस्तान हैं | कहीं अत्यधिक वर्षा होती है तो कहीं एक-एक बूँद के लिए लोग तरसते हैं | इतनी सब विविधताएँ होने के बावजूद भी भारत में एकता है | उसकी एकता के सूत्र , उसकी संस्कृति एवं सभ्यता में देखे जा सकते हैं |

जन संस्कृति

नेहरू जी ने भारत के हर कोने का अवलोकन किया परंतु उन्हें भारत की एक समान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मिली | भले ही लोग अलग-अलग प्रांतों के थे | इस पृष्ठभूमि में लोक प्रचलित दर्शन, परम्परा , इतिहास , प्राचीन कथाएँ सभी का मेल से था कि किसी को अलग - अलग करना असंभव था | उन्होंने सभी स्थानों पर पाया कि गाँवों के लोग पूरी तरह अशिक्षित और निरक्षर होते हुए भी भारत के महाकाव्य रामायण और महाभारत का अच्छा ज्ञान थे | प्राचीन ग्रंथों के सैकड़ों पद कंठस्थ थे | वे नैतिक उपदेश देने माहिर थे | ये देखकर वे सोचने लगे कि मेरे मन में लिखित इतिहास और तथ्यों से निर्मित तस्वीर है तो किसान लोगों के मन में अपनी तस्वीरों का भंडार है | जो किसी साहित्य से कम नहीं है | इस प्रकार नेहरू जी को ग्रामीण अनपढ़ लोगों की बौद्धिक शक्ति का अहसास हुआ |

अपने निरीक्षण के दौरान उनकी नजर संवेदनशील चेहरे , बलिष्ठ देह वाले पुरुषों पर गई | प्रेम , नम्रता , गरिमा और संतुलन स्वभाव वाली महिलाओं को देखा जिनके चेहरे पर विषाद की रेखा खींची हुई थी | उन्हें देखकर नेहरू जी सोचा , यदि हालात बेहतर हों और करने के लिए काम मिलें तो ये देश की उन्नती में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं | समाज में चारों ओर गरीबी, भूखमरी, असुरक्षा फैली हुई थी जिससे लोग परेशान थे | लेकिन भारत की वास्तविकता यह थी कि हर हालात को सहन करने की शक्ति भारतीयों में थी | भारतीय सांस्कृतिक विरासत की देन नम्रता और भलमनसाहत हजारों वर्षों से भारत की धरोहर रही जिसे बड़े से बड़ा दुर्भाग्य भी मिटा नहीं पाया |

निष्कर्ष के रूप में यह कहना ही उचित है कि नेहरू जी की दृष्टि में यही सत्य था कि भारत को कितने दौरों से गुजरना पड़ा लेकिन इसके आधारभूत तत्वों को कोई हिला नहीं पाया |